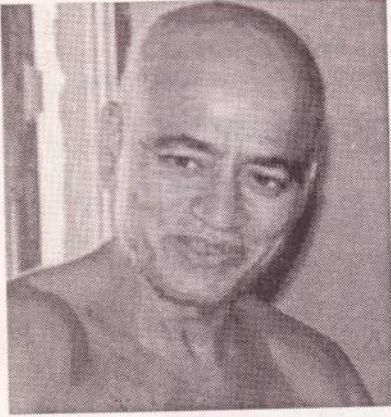


Chirping Sparrow



Title Verification No. : UPENG 03049/24/1/2005-TC



गुरु पूर्णिमा
रक्षा बंधन
स्वतंत्रता दिवस
शिक्षक दिवस

जो ज्योति सा
मेरे हृदय में
रोशनी भरता रहा
वह देवता

जो साँस बन
इस देह में
आता रहा
जाता रहा
वह देवता

जो दूर रह कर भी
सदा से
साथ मेरे है
यही अहसास
देता रहा
वह देवता

मैं जागता हूँ
या नहीं
यह देखने
द्वार पर मेरे
दस्तक सदा
देता रहा
वह देवता

जो गति
मेरी नियति था
ठीक मुझ - सा ही
मुझे करता रहा
वह देवता ।

— मुनि श्री क्षमासागर

Young Achievers



Pradeep Jain

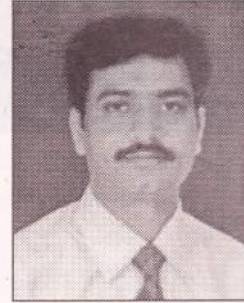
Shivpuri, M.P.
B.A., MBA

Selected In M.P. Psc as Deputy Collector



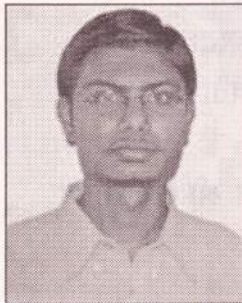
Akhilesh Kumar Jain

Kolaras (Shivpuri), M.P.
Selected In M.P. Psc as Deputy Collector



Adesh Kumar Jain

Burhanpur
Selected as Civil Judge
LLB, Gold Medalist, LLM, Gold Medalist, UGC Qualified



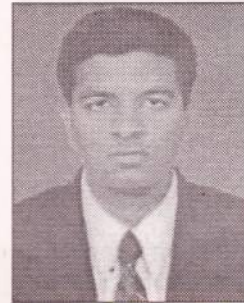
Prerak S Shah

YJA-2002 & YJA-2004
B.E. In 7 Semesters (3.5 Yrs) CPI8.63
Working In Essar Steel



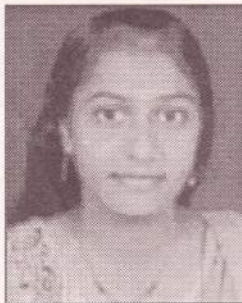
Namratha Nirmal

Banglore
YJA 2003, 2004
CA With 23rd All India Rank



Arpit A. Gandhi

Surat
YJA2004, B.Tech With 92.2 %
16th AIR In GATE



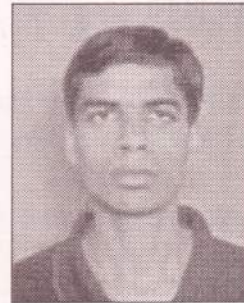
Bhavita Shah

Indore
YJA 2005
Black Belt In Karate, National Player



Simpal Jain

Jaipur
YJA 2002, MBA
Guinness/ Limka Book World Records For Memory
Working in Nestley



Alok Jain

Kishangarh
YJA 2004
BE Hons. In 7 Semesters (3.5 Yrs) CPI 9.86
Working In Nvidia Graphics

CHIRPING SPARROW

Year-4, Issue-IV

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Jankalyan Samiti.

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

E-mail : maitreesamoooh@hotmail.com • website : www.maitreesamoooh.com

Mobile : 94254-24984

नग्नता यानि पारदर्शिता

दिगम्बर साधु को लेकर लोगों में भ्रान्तियां हैं। लोग सोचते हैं कि समाज में कोई और तो नग्न नहीं रहता तो फिर ये क्यों? ऐसे लोगों को कम से कम इतना विचार करना चाहिए कि आखिर इस आदमी के नग्न होने का क्या कारण है? क्या इसके पास वस्त्र नहीं है या बेघर हैं, विक्षिप्त है? आखिर क्या कारण है? वे जब विचार करेंगे तो जानेंगे नग्नता मजबूरी नहीं है बल्कि एक समृद्ध जीवन दर्शन है। स्वेच्छा से, ज्ञानपूर्वक इन्द्रिय विजय की सूचना है। नग्नता — दिगम्बर है, एक जीवन दर्शन है मुक्ति की ओर ले जाने वाली है।

दिगम्बर अपरिग्रह से शुरू होता है, यह रागद्वेष के परिहार से शुरू होता है। वास्तव में इन्द्रियजयी होना ही नग्न होना है। इन्द्रियजयी होना यानि इन्द्रियों का निग्रह करना। जिसने अपने विचारों पर विजय नहीं पाई, वह व्यक्ति अकेले नग्न होकर दिगम्बरत्व को थोड़े ही प्राप्त कर सकता है। दिगम्बर यानि जिसने दिशाओं को ही अपना वस्त्र बना लिया है। ओढ़ना बिछाना जिसकी दिशाएँ हो गई हैं। जैनागम में दिगम्बरत्व को यथाजात रूप भी लिखा गया है। जैसा शिशुवत्, निर्विकार और निश्चल जिसका चित्र है — बाहर भीतर, वह दिगम्बर मुनि है। इस तरह की नग्नता, अपरिग्रह का चरम विकास है। अपरिग्रह का विकास/सर्वोत्तम विकास है। नग्न हो जाना यानि इस अवस्था में सारी आसक्तियाँ टूट जाती हैं, यहां तक कि शरीर तक की आसक्ति टूट जाती है। शरीर के प्रति निर्ममत्व होकर उसका उपयोग केवल साधन के रूप में किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि शरीर से कोई द्वेष है।

नग्नता की लम्बी परम्परा है। वेदों, उपनिषदों में इसके बारे में लिखा गया है। “परमहंस” और “जाबाल” में भी इसके बारे में आया है। परमहंस उपनिषद् के एक अंश में कहा गया है — तदेतद् विज्ञाय पात्रं कमडलुं कटिसूत्रं कोपीनं च तत्सर्वमप्सु विसृज्याय जातरूपं धरः चरेत् आत्मानं अन्विच्छेत्। यथाजात रूपधरों निर्द्वन्द्वो निष्परिग्रह तत्त्व ब्रह्ममार्गं सम्यक् सम्पन्नः शुद्धमानसः प्राण संधारणार्थम् । यथोक्तकाले करपात्रेण अयाचित आहार आहरन् । “आत्मा के अन्वेषण के लिए हैं ब्राह्मण तुम्हें इतना तो करना ही पड़ेगा यानि यथाजात होना होगा।” यथाजात, निःसंदेह नग्नता का पर्याय शब्द है। यथाजात यानि तन—मन से नग्न होना यानि अत्यंत स्वाभाविक होना है।

नग्नता स्वाभाविकता है, प्राकृतिक है। एक दिगम्बर मुनि के साथ नग्नता सहज व स्वाभाविक है ऊपर से थोपी हुई नहीं है। मुगलों के जमाने में कहते हैं कि अबुल कासिम गिलानी और सरमद इन दोनों ने नग्नता को अंगीकार किया था। जब औरंगजेब ने उन दोनों से कहा कि आप वस्त्र पहन लीजिये तब सरमद ने उससे कहा — “जिसने तुझे बादशाहत का ताज पहनाया उसी ने हमें यह लिबास भी दिया है। खुदा ने जिस किसी में भी एब पाया तो उसे वस्त्र पहिनाये और जिसमें कोई एब नहीं पाया उसे नग्नता का लिबास दे दिया।”

वही दूसरी ओर सामान्य नग्नता अभद्र दिखाई देती है, लेकिन साधु की नग्नता अभद्र नहीं दिखती है। यहां तक कि वस्त्र पहने हुए व्यक्ति भी अपने आँख के इशारे से किसी के मन को विकृत, दूषित कर सकता है। लेकिन निर्वस्त्र अपनी सौम्य मुद्रा द्वारा दूसरों को विरक्त होने का संदेश देता है। दिगम्बर मुनि की नग्नता आईना है अपने आपको देखने का, स्वयं को कसौटी पर डालने का, कि इस तरह का भी अर्थात् दिगम्बर बनना एक निर्मल आरसी बनने जैसा है। दिगम्बर मुनि दर्पण तब बन जाता है कि जब उसे कोई देखे तो उसका “दर्प” ओले की तरह गल जाता है कि जब कोई यह दर्पण देखे और फिर भी उसमें कोई “दर्प” अथवा “कन्दर्प” शेष रह जाए तो भारी गड़बड़ है। “कन्दर्प” यही प्रतीति देता है कि विकार कहीं बचे हुए है।

नग्नता और संयम का अदृष्ट बंधन है। संयम यानि आत्मानुशासन! वस्तुतः जिसने इन्द्रिय और मन को निरन्तर वशीभूत किया है या इन्हें वश में करने के लिए अनवरत उत्सुक रहा है वहीं नग्न हुआ है या हो सकता है। संयम को यदि माइनस कर दें तो नग्नता अश्लीलता बन जाएगी और यदि सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र को प्लस कर दें तो नग्नता मोक्ष की ओर ले जाएगी। नग्नता के साथ वीतरागता का जुड़ना मानवता को धन्य करता है। जैन मुनि में नग्नता के साथ वीतरागता मणि—कांचन योग होता है। नग्नता का अपना सौन्दर्य होता है और इस सौन्दर्य को देखना है तो गोमटेश बाहुबली में देखना चाहिए।

नग्नता स्वाभाविकता से आवरण हटाने की प्रक्रिया है। यह मौलिकताओं का / आध्यत्मिक मौलिकताओं का अनावरण है।

वीतरागता/दिगम्बर के लिए भी बाह्य आवरण हटाने की जरूरत होती है इससे स्थूल नग्नता घटित हो जाती है, लेकिन भीतर से नग्न हो पाना यह तो उत्तरोत्तर होने वाला विकास है।

यही दूसरा पक्ष भी है। जिसके भीतर नग्नता आ गई है, वह बाहर आवरण पसंद नहीं करेगा। उसके ऊपर से वह गिर जायेगा। इसी भाषा में कहे, क्योंकि ग्रहण करने का भाव ही उसमें शेष नहीं रहेगा।

चक्रवर्ती भरत को घर में ही वैराग्य हो गया था। जितनी ऊँचाई तक घर में विरक्त हुआ जा सकता है उतनी ऊँचाई तक वैराग्य भरतजी ने पाया। यह भीतर का नाग्य था, उनकी भीतर की ग्रन्थियां घटी थी साथ में और जो भी कषायें थीं, वे कम हुईं। कषायों का, राग द्वेष का घटना ही निर्ग्रन्थता है, यही दिगम्बरता की सीढ़ी है। और जैसे ही उन्होंने वस्त्रों का विमोचन किया और अपने आप में संलीन हुए तो अन्तर्मुहूर्त में कैवल्य हो गया।

नग्नता/निर्वस्त्रता ज्ञान और चारित्र के साथ ऊँचाई को पा लेती है और समाज को अपरिग्रहता का संदेश देती है। हम अपने परिग्रह और अपनी इच्छाओं का परिमाण करें, कम से कम में अपना जीवन चलायें। समाज में इन दिनों बढ़ती चारित्रहीनता (अब्रह्म) है, उससे बचे और तीसरी बात हम अल्पतम ले और अधिकतम लौटायें। इस संदेश को पहले स्वयं तक फिर औरों तक पहुंचायें।

दिगम्बरता किसी साधक को आत्मनिर्मरता की ओर ले जाती है। सब तरह के अबलम्ब छोड़ने की शुरुआत। नग्नता एक तरह की पारदर्शिता है। वह सामाजिकों के लिए विशुद्ध/निर्दोष ट्रान्सपैरेन्सी है। इसे मैं शुचिता का दर्पण मानता हूँ।

मैं जब विहार कर रहा था, कलकत्ते की तरफ, तब एक एस.पी. मेरे साथ चले रहे थे। उन्होंने पूछा की आपकी यह नग्नता हमें क्या संदेश देती है, देश को इससे क्या बेनीफिट मिला? तब मैंने उन्हें जवाब दिया कि मैं इतने कम से काम चला सकता हूँ अर्थात् एक संदेश तो यह मिलता है कि हम अपनी आवश्यकताओं को कम करें। दूसरा यह भी कि हमने वह वस्त्र, जो हमारे काम आते, का भी परित्याग कर दिया। अब वह किसी और के काम आयें जिन्हें इनकी आवश्यकता है। यह नग्नता का अर्थशास्त्र है।

आचार्यश्री से जब पूछा गया कि जैन मुनि नग्न रहते हैं, दांत साफ नहीं करते तो वे अस्पृच्छ रहते होंगे। तब उन्होंने कहा कि “मैं स्नान नहीं करता, मैं तो चौबीसों घंटों स्नान करता हूँ। मैं सनलाइट/मूनलाइट में नहाता हूँ। हवाएं मुझे सदा स्नान कराती ही हैं।” “ब्रह्मचारी सदाशुचिः” अर्थात् — जो ब्रह्मचर्य की साधना करता है उसके शरीर और मन दोनों पवित्र होते हैं। नग्नता विलक्षण/अमोघ वरदान है।”

मुनि क्षमासागर

पूरा उपयोग करें 24 घण्टे का

जीवन में सफलता का पैमाना सभी के लिए अलग-अलग हो सकता है लेकिन एक बात सभी चाहते हैं कि दुनिया उन्हें सफल होते हुए देखे। सफलता सभी युवाओं के लिए आज नशा बन चुकी है। सफलता के लिए आज का युवा बहुत मेहनत भी कर रहा है। सभी पढ़ लिखकर नई ऊँचाईयों का छूना चाहते हैं, शिखर पर पहुँचना चाहते हैं। सफलता के लिये सभी के पास अवसर की समानता भले ही न हो लेकिन समय सभी के पास बराबर का है और वह है आपके चौबीस घण्टे। चाहे कोई कितना भी सफल हो या असफल यह बात सभी पर लागू होती है कि उनके पास केवल चौबीस घण्टे ही होते हैं। सफल व्यक्ति अपने चौबीस घण्टों को ठीक से इस्तेमाल करता है, और असफल व्यक्ति इन्हीं चौबीस घण्टों में अपना ज्यादातर समय बर्बाद कर देता है या अपने समय पर पूरा नियंत्रण नहीं रख पाता है।

आप किसी भी सफल व्यक्ति को देखिये, उसकी दिनचर्या निश्चित रूप से नियंत्रित व सधी हुई होती है, वह समय का मैनेजमेंट कुछ इस तरह से करता है कि वह सफलता की सीढ़ी अवश्य ही चढ़ने में कामयाब हो जाता है। असफल व्यक्ति ज्यादातर ईर्ष्या, तनाव, खराब स्वास्थ्य, अनर्गल प्रलाप से ग्रसित होता है व असफलता के बारे में ज्यादा चर्चा करता है। हर असफल व्यक्ति के पास अपनी असफलता के लिए पर्याप्त एवं ठोस कारण मौजूद होते हैं, जिसमें अवसर की कमी, प्रतिकूल स्थिति एवं घरेलू परेशानियाँ प्रमुख कारण होते हैं, जबकि सफल व्यक्ति के पास प्रतिकूल स्थिति की कमी नहीं होती और वह धैर्य से उसका सामना करके स्थिति को अनुकूल बनाने में सफल हो जाता है।

सफल व असफल व्यक्ति की दिनचर्या में यह जो भारी अंतर देखा जाता है कि सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक वे अलग तरीके से जीते हैं यदि आप सभी अपने विद्यार्थी जीवन से ही इस बात का प्रयास करेंगे कि अपने प्रतिदिन के 24 घण्टे के समय को अपने नियंत्रण में रखेंगे, तब आपकी सफलता का आधा रास्ता अपने आप ही तय हो जाएगा व आप जल्दी ही सफल लोगों की श्रेणी में खड़े हो सकेंगे। प्रस्तुत है कुछ ऐसे उपाय जिनके

माध्यम से आप समय का सही इस्तेमाल कर सकते हैं।

सुबह का सही इस्तेमाल

ज्यादातर लोग अपनी सुबह का सही इस्तेमाल नहीं करते, जिसके कारण उनका सारा दिन अस्त-व्यस्त सा बीतता है। लगातार ऐसा होने से वे अपने जीवन में सफलता से दूर होते जाते हैं। देर तक सोने में बहुत मजा तो आता है, लेकिन बहुत ही अमृततुल्य वातावरण से वे वंचित रह जाते हैं। सुबह की ताजी हवा में सैर एवं थोड़ा व्यायाम नियमित करने से निश्चित ही जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है, क्योंकि आपका दिमाग ज्यादा अच्छी तरह से सोच सकता है, आपका शरीर ज्यादा क्षमता से कार्य कर सकता है। यदि आज से ही आप अपनी सुबह का सही इस्तेमाल करने लगे तो आप थोड़े महीनों में ही अपने आप में बड़ा परिवर्तन अवश्य महसूस करेंगे।

महत्वपूर्ण कार्यों का चार्ट बनाएं -

सुबह की सैर एवं नाश्ते के तुरन्त बाद अपने महत्वपूर्ण कार्यों की सूची बनाएं। उन्हें कब और कैसे करना है, इस बात का निश्चय करके उस को डायरी में नोट करने की आदत डालें। इससे आपको अपने सभी कार्य निबटाने में बड़ी सहायता मिलेगी, आप कुछ भूलेंगे नहीं समय की बचत करने में कामयाब होंगे।

लक्ष्यों एवं उद्देश्यों/क्षमताओं को पहचानें -

सभी के अपने-अपने लक्ष्य एवं अपने उद्देश्य होते हैं, अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पण रखना एवं उसकी प्राप्ति के लिए लगातार सही दिशा में कार्य करते रहना बहुत ही मुश्किल होता है, इसलिए आप देखेंगे कि बहुत से लोग जीवन में जो बनना चाहते थे, बन नहीं सकें। इस मामले में सतर्कता एवं समझदारी की आवश्यकता होती है। लक्ष्य बनाने से पहले अपनी क्षमताओं का आंकलन करना बहुत जरूरी है। अपनी क्षमताओं को पहचाने बिना ही लक्ष्य बनाना घातक होता है, जो कि बाद में आपकी मानसिक परेशानी का कारण बनता है। अतः अपनी क्षमताएं पहचानें, अपनी योग्यता का सच्चा आंकलन करें, साथ ही परिवार के वातावरण को समझकर ही लक्ष्य बनाएं ताकि

आप पूरी मेहनत के बाद लक्ष्य तक पहुँच सकें और जीवन को खुशहाल बना सकें।

वातावरण पर पैनी नजर -

अपने आसपास के वातावरण, परिवार के वातावरण एवं दुनिया में बदलते परिवेश का पूरा ध्यान भी आपकी जवाबदारी है, ताकि आप बदलते वक्त के साथ अपने आपको ढाल सकें। सफल होने के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि आप परिस्थिति के अनुसार अपने आपको बदलने को तैयार रहें ताकि आपको कोई परेशानी न हो। याद रखें जो परिस्थिति के अनुसार बदलने को तैयार नहीं होते वे अक्सर असफलता की गर्त में चले जाते हैं। यदि आप कोई नौकरी पाना चाहते हैं और यदि उसकी योग्यता की मांग बदल रही है, तब आपको अपने आपको उसकी मांग के अनुसार तैयार करना जरूरी है। यदि परिवार का सहयोग आपके साथ नहीं होगा तब आप हो सकता है न सफल हो पाएँ या यदि सफल हो भी जाएँ तो आपको देर लग सकती है या सम्भवतः आपको उस सफलता की पूरी खुशी न मिल सके। अतः आवश्यक है परिवार के सभी सदस्य वातावरण को तनाव मुक्त रखने में अपनी जिम्मेदारी निभाएं।

सफल लोगों से जुड़ें -

आप किससे मिल रहे हैं, किससे क्या बात कर रहे हैं, किससे कैसी और क्या सलाह ले रहे हैं। इस बात का आपकी सफलता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। कहावत भी है कि गलत संगत आपको गलत राह पर ढकेलती है। यह बात बिलकुल सत्य है, अतः अपने आस-पास ऐसे लोगों को बिलकुल न फटकने दें जो निराशावादी बातें करते हैं या आप सफल क्यों नहीं हो सकते, इस बारे में आपको बताने में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं। आप जो भी लक्ष्य बना रहे हैं, उन लक्ष्यों में पहले से सफल व्यक्ति आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होंगे। आप अपने उद्देश्यों से मिलते जुलते व्यक्तियों से ज्यादा सम्पर्क में रहे ताकि आपकी राह में आने वाली कठिनाईयों को मिलकर दूर करने में मदद मिल सके।

- साभार

Q हम मंदिर में पूजा क्यों करते हैं ? पूजा करने के बजाय धार्मिक ग्रन्थ पुराण क्यों नहीं पढ़ते हैं ? पूजा का मुझे सही अर्थ बताइये क्योंकि जब कभी भी पूजा करती हूँ मुझे आत्मीय संतुष्टि नहीं मिलती है। मुझे पुराण आदि ग्रन्थ पढ़ना ज्यादा अच्छा लगता है क्योंकि उनमें मुझे जीवन के बारे में कई बातें पता लगती हैं।

खुशबु जैन, सागर

A पूजा का अर्थ पवित्र होना है। पूजा के समय हम भगवान के प्रति सम्मर्पित होकर अपनी कषायों को कम करते हैं अर्थात् पहले की अपेक्षा पूजा के बाद अधिक पवित्र हो जाते हैं। पूजा और अभिषेक मंदिर की प्रयोगशाला में किए जाने वाले दो प्रमुख प्रयोग हैं। पूजा को अतिथि संविभाग व्रत के अन्तर्गत रखा गया है क्योंकि श्रवक स्वयं भोजन करने से पहले पूजा के योग्य सामग्री तैयार करके जिन बिम्ब के समीप अर्पित करता है। भगवान के समान गुणों को प्राप्त करने की नहीं बल्कि पूजा के उपरान्त भी दिन भर मन वाणी और कर्म में पवित्रता बनी रहे ये ही पूजा का उद्देश्य है। पूजा के दौरान भगवान के समान पवित्र बनने की भावना रखनी चाहिए इसलिए पूजा को वैयावृत्ति या सेवा भी कहा गया है। पूजा करते समय हम पांचों पापों से मुक्त होकर पंचपरमेष्ठी के गुणगान में लीन हो जाते हैं इसलिए पूजा को श्रावक के सामाजिक नामक शिक्षाव्रत में भी शामिल किया गया है। पूजा करते समय हम एकाग्र होकर पंचपरमेष्ठी वाचक विभिन्न पदों (मंत्रों) के माध्यम से भगवान जिनेन्द्र के स्वरूप का स्मरण करते हैं। इसलिए पूजा एक तरह का पदस्थ ध्यान भी है। पूजा के दौरान चूंकि वीतरागी देवशास्त्र गुरु के स्वरूप का चिंतन और अपना आत्मावलोकन दोनों साथ-साथ चलते रहते हैं, अतः पूजा को समन्वित रूप से स्वाध्याय भी कहा है। अधिक समय तक

एकाग्र होकर मंत्र का जाप करना कठिन है और जिसे ज्ञान नहीं उसे स्वाध्याय करना भी कठिन है लेकिन पूजा करना आसान है इसलिए सदगृहस्थ को अशुभ कार्यों से बचा कर अधिक समय तक धर्म ध्यान में लगाये रखने में जिन पूजा अत्यन्त उपकारी है। श्रावक के षट् आवश्यक कहे गये हैं, जिन को रोज अवश्य ही करना चाहिए। यह स्कूल में पढाये जाने वाले वह पीरियड के समान – जिसमें से प्रत्येक का किया जाना आवश्यक है। जिन पूजा, गुरुपास्ति शास्त्र स्वाध्याय, संयम, तप और दान हर एक को करने का प्रयास करना चाहिए। जिस चीज को करने में मन नहीं लगता है उसे मन लगाकर अधिक समय करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि जैसे स्कूल में सब विषयों में विशेष योग्यता लाने का प्रयास हम करते हैं ऐसे ही छह आवश्यकों में से प्रत्येक आवश्यक में विशेष योग्यता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। आपका मन स्वाध्याय में लगता है यह ठीक है लेकिन पूजा भी स्वाध्याय का ही एक रूप है। इसलिए पूजा में भी मन लगाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप पूजा की द्रव्य चढ़ाते समय, पूजा के द्रव्यों में मिलने वाला संदेश ग्रहण करेंगे तो पूजा से आन्तरिक शान्ति प्राप्त होगी। जैसे पूजा में फल चढ़ाते समय फल के स्थान पर बादाम या सुपारी की जगह किशमिश चढ़ाये और भावना रखे कि किशमिश के समान हमारा जीवन भी बाहर भीतर कोमल बने तो फल चढ़ाने की सार्थकता होगी। इसी प्रकार अन्य द्रव्यों के बारे में भी उनसे मिलने वाला व्यवहारिक संदेश ग्रहण करें तो पूजा में मन लगेगा, और आत्मसंतोष मिलेगा।

Q मैं अपने घर से तीन किलोमीटर दूर पैदल नौकरी करने जाती हूँ जहाँ स्टेशन रोड़, तहसील से मुझे निकलना होता है रास्ते में कई जगह मांसाहार रखा रहता है और रोड़ पर चिकन वगैरह बनते

हैं। कई बार मेरे सामने काट दिया जाता है। और तड़प-तड़प कर मर जाती है फिर वही व्यक्ति उसका मांस खाता है और लोगों को खिलाता है। यह देखकर मैं दिन-दिन भर खाना नहीं खाती और मेरा नौकरी में मन नहीं लगता है मैं जीव हिंसा को रोकना चाहती हूँ पर कैसे मैं यह नहीं जानती, कृपया मुझे सही रास्ता बताइये।

खुशबु जैन, सागर

A मांसाहार करने वाला व्यक्ति अपनी संवेदनशीलता को भुला देता है और जीवों की हिंसा करता है। उसे देखकर अपने को भी दुःख होता है। पर, भावना ही भा सकते हैं कि हिंसा न हो, बाकी किसी को हम रोक नहीं सकते हैं। आप स्वयं हिंसा से बच सकते हैं। और अपने आस-पास के लोगों को अपने अहिंसक आचरण की शिक्षा दे सकते हैं। अभी कोर्ट ने आदेश दिया है कि मांसाहारी दुकाने शहर के बाहर लगाई जाएंगी शहर में सब दुकानों की तरह अण्डा और मांस बेचने वाली दुकाने नहीं लगेगी। आप नगर पालिका को कहकर शहर के बीच में अण्डा और मांस बेचने की दुकानों को दूसरी जगह लगवाने का प्रयास करिए। इस तरह का प्रयास करिए क्योंकि अपने पास कोर्ट का आदेश है इसलिये कलेक्टर को और नगर निगम को यह कार्य करने में कोई मुश्किल नहीं आयेगी।

Q मुनिश्री क्या हिन्दी में भक्तामर पढ़ने की अपेक्षा संस्कृत में भक्तामर स्तोत्र पढ़ने का महत्व अधिक है अथवा भावों को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए अर्थात् उसे पढ़े जिसे पढ़ने में अधिक मन लगे।

प्रमिला जैन, एम.पी.एस 4273
पथरिया दमोह

A भक्तामर मूलरूप से संस्कृत भाषा में ही लिखा गया है इसलिए भाषा

की अपेक्षा संस्कृत ही पढ़ना चाहिए। उसका हिन्दी अनुवाद मात्र अनुवाद है जो कि मूल से भिन्न हो सकता है। किसी भी स्तुति को पढ़ने में उसका अर्थ उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि श्रद्धा पूर्वक उसे पढ़ा जाना। पढ़ते समय अर्थ भले ही समझ में नहीं आ रहा पर मैं भगवान की स्तुति कर रहा हूँ यह श्रद्धा ही उस स्तुति को महत्वपूर्ण बनाता है। संस्कृत में मंत्रों के समान स्तुति भी पढ़ने से वैसे ही प्रभाव करती है जैसे कि मंत्र, स्तुति स्वयं मंत्र हो जाती है इसलिए मूल भाषा में ही स्तोत्र पढ़ा जाना उपयोगी है।

Q हमारे यहां चतुर्दशी को रात में अभिषेक होता है, रात में पूरा पंचामृत व अभिषेक देखना उचित है या अनुचित।

प्रज्योति दिया जैन कारंजा (लाड)

A उत्तर भारत में अधिकांश जगह दिन में ही भगवान का अभिषेक किया जाता है, लेकिन दक्षिण भारत में प्रायः सभी जगह रात्रि में ही अभिषेक होता है। वैसे अकृत्रिम जिनालयों में देवों के द्वारा चौबीस घण्टे अभिषेक होता है वहां दिन रात का भेद नहीं रहता इसलिये चारों निकायों के देव छह-छह घण्टे के हिसाब से चौबीस घण्टे अभिषेक करते हैं। वैसे रात में अभिषेक करना जीव हिंसा के लिए बढ़ावा देने वाला है और फिर पंचामृत अभिषेक में तो घी, दूध इत्यादि में बहुत जीवराशि होने की संभावना रहती है इसलिए यदि अभिषेक दिन में ही हो तो ज्यादा अच्छा है वरना जहां जैसी परम्परा हो उसी के अनुसार करना चाहिए।

Q जहां पर पंचकल्याणक होता है वहां पर बहुत सी प्रतिमाओं का पंचकल्याणक कर लेते हैं बाद में उन्हें बेचते हैं यह कहां तक उचित है।

प्रज्योति दिया जैन कारंजा (लाड)

A पंचकल्याणक से पहले प्रतिमाओं को खरीदा जाता है और उचित न्यौछावर राशि देकर उस प्रतिमा को ले लिया जाता है फिर पंचकल्याणक के लिए रखा जाता है

अर्थात् पंचकल्याणक के पहले प्रतिमाओं को खरीदना और बेचना तो योग्य है, लेकिन पंचकल्याणक होने के उपरान्त प्रतिमाओं को खरीदना या बेचना योग्य नहीं हैं। कोई व्यक्ति यदि प्रतिष्ठा के उपरान्त उस मूर्ति की न्यौछावर राशि देते हैं तो कोई हर्ज नहीं है।

Q बहुत सी जीर्ण-क्षीण किताबें, भगवान के फोटो, भगवान के लिखे हुए पेज वगैरह जलाकर उसकी राख कुएं में डालना उचित है या अनुचित। यदि अनुचित है तो इस सब का क्या करें।

प्रज्योति दिया जैन कारंजा (लाड)

A बहुत सी जीर्ण-शीर्ण किताबें आदि को अविनय से बचाने के लिए उन्हें या तो अग्नि में समर्पित किया जाता है या गहरे पानी में विसर्जित कर दिया जाता है यदि समर्पित करते हैं तो उसकी राख को गहरे पानी में, चाहे वह कुआँ हो या नदी में विसर्जित करने का विधान है।

Q सरल, सहज, विनम्र संयमी बनने के लिए हर क्षण कौन से भाव रखना चाहिए या क्या करना चाहिए।

प्रज्योति दिया जैन कारंजा (लाड)

A चार भावनाएं मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ ये भावनाएं रखने से जीवन सरल, सहज विनम्र बनता है।

प्रेमभाव हो सब जीवों से, गुणीजनों में हर्ष प्रभो।
करुणा स्रोत बहे दुखियों पर,
दुर्जन में मध्यस्थ विभो॥

इस सामायिक पाठ में चार प्रकार की भावनाओं का उल्लेख मिलता है प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव, मैत्री का अर्थ मित्रता नहीं है मैत्री का अर्थ है कि किसी भी जीव को दुःख न हो, सब जीव सुखी रहें ऐसी भावना होना ही मैत्री भाव है। जिसके भीतर ऐसा मैत्रीभाव आ जाता है वह सरल, सहज और विनम्र हो जाता है तथा गुणवान लोगों

को देखकर उनके प्रति हर्ष प्रकट करने का भाव ही प्रमोद भाव है। सामान्यतः दूसरे के गुणों को हम सहन नहीं कर पाते हैं और उससे ईर्ष्या करने लगते हैं। यदि गुणवान व्यक्ति के प्रति हर्ष का भाव आ जाये तो जीवम अच्छा बन सकता है और दीन दुःखी जीवों के प्रति करुणा भाव या दया भाव आना चाहिए या जो बुरे मार्ग पर चल रहें हैं ऐसे लोगो के प्रति तटस्थता का भाव अर्थात् न स्नेह और न द्वेष इस प्रकार इन चारों भावनाओं से जीवन में सरलता और विनम्रता आ सकती है।

मेरी भावना में कहा है कि -

मैत्री भाव जगत में मेरा
सब जीवों से नित्य रहे
दीन दुःखी जीवों पर मेरे,
उस से करुणा स्रोत बहे॥
दुर्जन कूर, कुमार्ग रतों पर,
क्षोव नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रखूं मैं उन पर
ऐसी परिणति हो जावे।
गुणीजनों को देख हृदय,
मेरे प्रेम उमड़ आवे
बने जहां तक उनकी सेवा,
करके यह मन सुख पावे।

जीवन को संयमित बनाने के लिए प्राणी संयम और इन्द्रिय संयम आवश्यक है। किसी भी जीव को क्षति न पहुंचे इस बात का ध्यान रखा जाये और इन्द्रियों पर नियंत्रण रहे तो जीवन में संयम आ सकता है तथा पापों से विरक्त होना भी जीवन को संयमित बनाता है।

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिए। उसका उत्तर मुनिश्री द्वारा दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

- सम्पादक



APJ ABUDUL KALAM, ex-president of India has been so far the best and most beloved president in the history of Indian democracy. He has influenced millions. Here are some excerpts from his recent lectures in which he shares five unique values which are very relevant and useful for an individual, for a society and even for nations. He also gives a guideline or a roadmap in form of an oath for the ignited minds which he considers the most powerful resource for a nation.

We can help in development of our

nation as well as can make life on the earth very happy if we develop the following values among us.

1. Save or make better someone's life

While talking about good deeds, I am reminded of the advice given to Mahatma Gandhiji by his mother. She says, "Son, in your entire life time, if you can save or better someone's life, your birth as a human being and your life is a success. You have the blessing of the Almighty God". This advice made a deep impact in the mind of Gandhiji, which made him to work for the humanity throughout his life.

2. Remove "I" and "Me"

During the year 2003, when I was visiting Arunachal Pradesh, I visited a Buddhist monastery at Tawang 3500 m. altitude. I observed a unique situation in all the nearby villages, where young and experienced radiating happiness in spite of severe winter environment. Then, I visited the 400 year old Tawang monastery and there I saw monks of all age groups in a state of serenity. I was asking myself what is the unique feature of Tawang and surrounding villages which makes people and monks to be at peace with themselves. When the time came, I asked the Chief Monk, how in Tawang villages and monastery, I am experiencing peace and happiness

being radiated by everyone. There was a pause, the chief monk smiled and gave a short discourse, which I would like to share with you. Chief Monk said, "In the present world, we have a problem of distrust, unhappiness transforming into violence. This monastery spreads: when you remove "I" and "Me" from your mind, you will eliminate ego; if you get rid of ego, hatred towards fellow human beings will vanish; if the hatred goes out of our mind, the violence in thinking and action will disappear; if violence in our mind is taken away, peace springs in human minds. Then peace and peace and peace alone will blossom in the society". I realized the meaning of beautiful equation for peaceful life, but difficult mission for the individual is how to remove the ethos of "I" and "ME". For this, we need the education inculcated in the young age as propagated by ancient philosophers.

3. Forgiveness

In my search for evolving a peaceful and prosperous society, I got a part answer. My search for real truth continues. I visited an ancient Christian monastery in Bulgaria, where I had a discussion with highly experienced monks on the message of Tawang. The Monk added that forgiveness is also the foundation of good life.

4. Giving a trait of happiness

Similarly, I had a memorable experience in the birth place of Swami Vivekananda, a youth monk of India who could keep the audience spell bound in eastern and western societies with his inspirational messages of spirituality and practical life, I explained the Tawang experience to the disciples and they too felt the Tawang experience indeed is beautiful and they added "Trait of Giving " will add to peace and happiness.

The message from all these and other spiritual thinkers is that there are many ideas and spiritual thoughts which transcend religions, geographies and time. If only we could bridge the spirituality among religions and nations, many of the problems like the gaps between haves and have nots, deprivation causing unrest leading to extremism, the remnants of past animosities and war and several other road blocks to peace and prosperity can be tackled.

5. Together We Will Win

Friends, I would like to share with you an inspirational experience, which I came across. -

At a Special Olympics, nine contestants, all physically or mentally disabled, assembled at the starting line for the 100 mtr race. At the starting signal, they all started out, not exactly in a dash, but with a relish to run the race to the finish and win. All, others except one little boy who stumbled on the asphalt,

tumbled over a couple of times, and began to cry. The other eight heard the boy cry. They slowed down and looked back. Then they all turned around and went back.....every one of them. One girl with Down's syndrome bent down and kissed him and said, "This will make it better" Then all nine linked their arms together and walked together and finally reached the destination. Everyone in the stadium stood, and the cheering went on for several minutes. People who were there are still telling the story. Why? Because deep down we know this one thing: What matters in this life is more than winning for ourselves. What matters in this life is helping others win, even if it means slowing down and changing our course. I would say that, you do not have to slow down. Rather by helping difficult areas, the feed back will make you go faster. If you pass this on, we may be able to change our hearts as well as someone else's. "A candle loses nothing by lighting another candle".

Youth Power

I would like to put forth to you all that the ignited mind of the youth is the most powerful resource on the earth, above the earth and under the earth. I am convinced that the youth power, if properly directed and controlled, could bring about transformational changes in humanity for its progress, meeting its challenges and bring peace and prosperity. Youth can make difference to the society at every level. Having a small aim is a crime.

The youth working hard improving his knowledge with a career goal, can serve the family, can serve the society, can serve the nation to which he or she belongs and can serve the humanity as a whole. All are uniquely connected. We all should take the following oath and work towards fulfilling it.

Oath for the Youth

1. I will pursue my education or the work with dedication and I will excel in it.
2. From now onwards, I will teach at least 10 persons to read and write those who cannot read and write.
3. I will plant at least 10 saplings and shall ensure their growth through constant care.
4. I will visit rural and urban areas and permanently wean away at least 5 persons from addiction and gambling.
5. I will constantly endeavour to remove the pain of my suffering brethren.
6. I will not support any religious, caste or language differentiation.
7. I will be honest and endeavour to make a corruption free society.
8. I will work for becoming an enlightened citizen and make my family righteous.
9. I will always be a friend of the mentally and physically challenged and will work hard to make them feel normal, like the rest of us.
10. I will proudly celebrate the success of my country and my people.

अनुभूति



आचार्य महाराज की आज्ञा से हम 5-6 साधक सतना में चातुर्मास करके लौट रहे थे । आचार्य महाराज के दर्शन हमें लगभग डेढ़ वर्ष

की अनुकूलता रही । आचार्य महाराज सब सुनते रहे और सुनकर हँसने लगे, बोल- “कृपा तो हम सभी पर आचार्य ज्ञानसागर महाराज की है। भगवान महावीर के धर्म-तीर्थ की सेवा करना और अपने आत्म-हित के साथ-साथ सभी के हित की भावना रखना हमारा कर्तव्य है ।” उनकी अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण उन क्षणों में देखते ही बनता था । इतने में जैसे ही अचानक उन्हें अन्य साधुओं के कहने पर याद आया कि आज के ही दिन बारह वर्ष पहले मेरी क्षुल्लक दीक्षा हुई थी, तो तुरन्त मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़कर खूब हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि “चलो, अभी तो इस मोक्षमार्ग पर अपने को बहुत आगे बढ़ना है।”

से नहीं हुए थे । मन में दर्शन की बड़ी आतुरता थी। जबलपुर के समीप पहुँचने पर मालूम हुआ कि महाराज जी, शीघ्र ही जबलपुर पहुँच रहे हैं । अत्यन्त हर्ष-विभोर होकर हम उन्हें लिवाने जबलपुर से बरगी की ओर चल पड़े । कुछ दूर चलने पर रास्ते में ही महाराज जी के दर्शन-वंदन का सौभाग्य मिल गया ।

उनका स्नेह-स्पर्श पाकर और उनकी वाणी से झरते अमृत-वचन सुनकर हृदय भर आया । आँखे आसुओं से भीग गई । उन आत्मीय-क्षणों की स्मृति आज भी मुझे सहारा और प्रेरणा देती है ।

जब उनके साथ-साथ हम जबलपुर की ओर आ रहे थे तब रास्ते में हमने सतना के चातुर्मास की सफलता की चर्चा की और कहा जो भी बन पड़ा आपकी कृपा से हमने किया; सब अच्छे से हो गया । साधना, स्वास्थ्य और स्वाध्याय

जबलपुर (10 जनवरी, 1992)

मैंने ऐसा क्यों सोचा
आज
जब चिडिया
देर तक
मुझे एकटक
देखती रही,
फिर सहमी
और सहसा उड़ गयी ।
मैं दिन भर
उदास रहा,
कि मैंने
ऐसा क्यों सोचा
कि चिडिया का
एक पिंजरा होता
- मुनि श्री क्षमासागर



‘मुक्ति’ से साभार

Why Did I Wish

Today, the bird
looked at me intently,
then suddenly
flew away in fright.

I was sad when I realized
that I had wished
for a cage
to hold the bird in.

Translated by Sunita Jain

आदरणीय गुरुजी,

सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते

होते नहीं सब सत्यनिष्ठ !

मेरा बेटा सीखेगा यह

कभी - न - कभी!

मगर उसे यह भी सिखाइये,

दुनिया में हर बदमाश की तरह

होता है एक साधु चरित्र पुरुषोत्तम भी ।

स्वार्थी राजनीतिज्ञ होते हैं दुनिया में जैसे,

होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निष्ठावर
करने वाले नेता ।

होते हैं घात में बैठे दुश्मन अगर,

तो मेहरबान मित्र भी होते हैं ।

मैं जानता हूँ,

सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनती

फिर भी, हो सके तो उसके मन में
जमाईये

पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा भी
फोकट में मिले खजाने से ज्यादा मूल्यवान
है।

सिखाइये उसे कैसे झेलते हैं हार

और सिखाईए, जीत की खुशी में संयम ।

अगर आप में ताकत हो तो

सिखाइये उसे

ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना ।

सिखाइये, उसे अपना हर्ष भी संयम से
दिखाना ।

कहना, गुंडे से मत डर जाना

क्योंकि सबसे आसान होता है

उन्हें झुकाना

जितना बन पड़े दिखाया कीजिये उसे,

किताबों में छिपा अद्भूत खजाना,

पर साथ - ही - साथ

दीजिए उसके जी को जरा फुरसत

कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर
पाए ।

देख पाये वह

चिड़ियों की ऊँची उड़ान

सुनहली धूप में मंडराते भौरें

और हरी-भरी पहाड़ी की ढलान पर

झूमते नन्हें-नन्हें फूल ।

पाठशाला में उसे सबक मिले -

बेईमानी से पाई सफलता से

हजार गुना अच्छी है असफलता

यह सिखाईये की अपने विचारों और अपनी

सूझ-बूझ पर पक्का विश्वास रखें,

भले ही सब लोग उसे गलत ठहरायें,

वह भलों के साथ भलाई बरते और टेढ़ों

को सबक सिखाये ।

मेरे बेटे को विश्वास दीजिए कि

विजय के झंडे के नीचे खड़े होने की दौड़ती
भीड़ में,

शामिल न होने का साहस जुटाये ।

और यह भी समझाइये उसे कि सुने सबकी,
हर एक की

पर छान ले उसे सत्य की चलनी में,

और छिलका फेंककर

ग्रहण पड़े तो उतारिये उसके मन में -

हँसते रहो हृदय का दुख दबाकर !

कहिये कि आँसू बहाते शरमाये नहीं वह

सिखाइये उसे,

ओछेपन को ओछा मानना

और चाटुकारी से सावधान रहना ।

उसे पक्की - पूरी तरह समझाइये कि

खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की
लागत से,

लेकिन कभी भी न बेचे अपना हृदय, अपनी
आत्मा!

धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,

तो अनदेखा करना सिखाइये उसे,

और लिखिए, उसके हृदय पर

जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे

उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पाँव
लड़ता रहे अंत तक ।

उसे ममता दीजिए मगर

लाड़ करके मत बिगाड़िये ।

आग से जल - तपकर निकले बिना

लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता ।

उसे आदत डालिये कि

अधीर होने का धीर संजोये,

और धीरज से काम ले वह

अगर दिखानी है बहादुरी

हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत

तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के
प्रति।

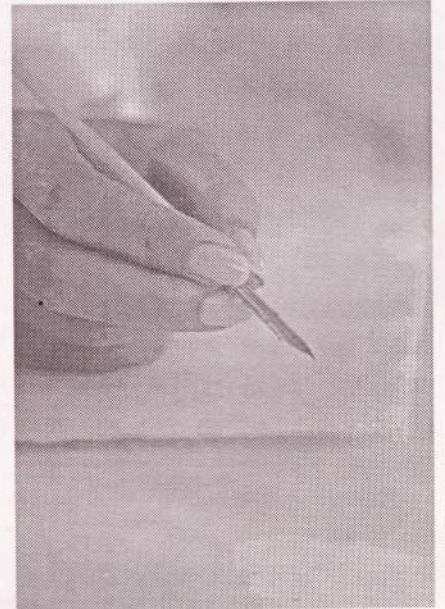
क्षमा कीजिए गुरुजी,

मैं बहुत बोल रहा हूँ,

बहुत - कुछ मांग रहा हूँ,

फिर भी देखिए जितना बने, कीजिए
जरूर।

- अब्राहम लिंकन





“मैत्री समूह के द्वारा भेजी गई पत्रिका हमें प्राप्त हुई है। इस पत्रिका में दी गई सभी जानकारी उल्लेखनीय है, क्योंकि ऐसी कोई भी वस्तु जिससे जिनेन्द्र देव की वाणी का प्रचार हो वे सभी श्रेष्ठ है। इस पत्रिका में ज्ञान वर्धक भाग दिए हैं, आज की युवा पीढ़ी नियम व ज्ञान से दूर हटती जा रही है। कषायों की बहुतायत है। ऐसे में पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कहानी व सरल माध्यम से प्रसार श्रेयष्कर है। यह पत्रिका पूरे भारत में सभी मंदिरों (जैन मंदिरों) में प्रेषित की जानी चाहिए।

राहुल कुमार जैन, भोपाल

आपका न्यूज लेटर प्राप्त हुआ। विपरीत परिस्थितियों वश जो आत्मविश्वास कम हो गया था वह पुनः एक नयी आत्म शक्ति लेकर इसे पढ़ने के बाद जाग्रत हुआ है। मैं इसे अब नहीं छोड़ूँगी। कई ऐसी बातें सामने आयी, जिनकी मैं हमेशा जबाब देूँती थी। मैत्री समूह द्वारा किया जाने वाला यह कार्य सराहनीय है जिससे युवाओं में एक नया जोश नया विश्वास एवं शक्ति जागृत होती है।

“जो सफर अख्तियार करते हैं वहीं वहीं मजिलों को पार करते हैं। बस चलने का हौसला तो रखिये ऐसे मुसाफिरों का तो रास्ते भी इंतजार करते हैं।”

रोशनी जैन
खुरई

आपके द्वारा प्रेषित Chirping Sparrow मुझे प्राप्त हुई। इस पत्रिका को पढ़ने के बाद मन में बहुत खुशी हुई व इसके माध्यम से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ जो आज तक न था, न ही शायद होता। मेरे परिवार व मित्रों को बिपत्तवपदह चंततवू बहुत पसन्द है क्योंकि यह ज्ञानवर्धक, प्रेरणा स्रोत है। इसमें जो एक-एक अक्षर, शब्द, ज्ञान से भरा और हमारे ज्ञान को बढ़ाने वाला है, वास्तव में वह “गागर में सागर” के समान है। जिस प्रकार सुबह चिड़ियों की चहचहाहट नया प्रकाश ला देता है ठीक उसी तरह Chirping Sparrow भी जीवन में नया प्रकाश लाने वाली पत्रिका है। ये ज्ञान सभी तक पहुंचाना चाहिए जिससे सभी के जीवन में प्रकाश रहे। I am Heartily thankful to you for sending me such a nice news book.

Shweta jain., sagar

Jal jinendra

I read the last issue of chirping sparrow...

The name “chirping sparrow” is perfect for this news letter as this letter is a podium that chirp like an sparrow which spread the melody of our religion in the ambience. The content of letter is purely practical, that enhance the quality and

charms the budding generation. The section “Mantra, Yantra and sound” was of great knowledge which was blended with scientific approach towards the Jain philosophy. We were delighted to read the journey of sansari Jeeva (the soul with eight karmas) to the NIRVANA (MOKSHA). The magazine proven to be a good platform for every one to share their knowledge thus, inspiring the nascent youth to creat a placid and candid ambience. Special Thanks for the blessings of munishree, for inspiring us and granting the pleasure to have such a treasure “CHIRPING SPARROW”. Thanks to Maitree Samooh and the editorial board to flavour this magazine in such an enchanted taste. May these blessings continues forever, so that we can serve our society in a better way and lead ourselves to the path of self enlightenment

Reshu Jain
Ashoknagar (M.P.)

इस पत्रिका पर अपने विचार, सुझाव और प्रतिक्रियाएं हमें लिख भेजें। आगामी अंकों में हम उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

RICH AND POOR

The father of a very wealthy family took his son on a trip to the country to show his son how poor people live. They spent a couple of days and nights in a farm of what would be considered a very poor family. On their return from the trip the father asked his son how was the trip? "It was great trip Dad. Did you see how the poor people live?" "Oh yeah", said the son. So tell me, 'what did you learn from the trip?' asked the father. The son answered- "I saw we have one dog they had four. We have a pool that reaches to the middle of the garden and they have a creek that has no end.

We have imported lanterns in our garden, they have stars at night.

Our patio reaches the front yard and they have the whole horizon. We have a small piece of land to live on. They have fields that go beyond.

We have servants who serve us. But they serve and help others.

We buy our food, they grow for all. We have wall around our property to protect us. They have friends to protect them."

The boy's father was speechless. Then the son added, "Thanks dad for showing me how poor we are."

Compiled by Roshan Jain

value of time

To realize value of one year
ask a student who was failed one year
to realize the value of one month
ask a mother who has given birth to a
premature baby
to realize the value of one week
ask a weekly editor
to realize value of one day
ask a daily wage laborer
to realize the value of one hour
ask the boy waiting a girl
to realize value of one second
ask the person who has meet with an accident
to realize the value of one millisecond
ask the person who has missed the gold medal
in Olympic
SO AIWAYS VALUE TIME.

--Ankita Jain (Ashok Nagar)

भीड़

जमाने की इस भीड़ में
कभी अपने पराये हो जाते है
तो कभी पराये अपने लगते है
जो सुख के हमारे साथी थे
कभी वो दुख में
आज हमसे कतराते हैं
किसे पहचान है इस भीड़ में
अपने और परायों की
कर दिखाना है कुछ ऐसा
उठकर ऊपर इस भीड़ से
जो बनाये सबको आपका
और आपको सभी का
मिटाना है इस भीड़ के अस्तित्व को
और रंगना है सबको एक रंग में
वह हो अपनेपन का

मोहताज

थाली में जूटन फँकने वाले
बचपन को क्या पता
जवानी को दुकड़ों को
मोहताज होना पड़ेगा ।

--राजेन्द्र पटोरिया



महत्वपूर्ण चिट्ठी

पहचान

बस स्टॉप पर खड़े वे बुजुर्ग बड़ी जल्दी में थे । उनकी उम्र 70 वर्ष से ज्यादा ही लग रही थी । उनकी एक बस छूट चुकी थी और दूसरी का वे बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे । सुबह का वक़्त था, बस स्टॉप पर ज्यादा भीड़ भी नहीं थी, इसलिए लोगों की निगाहें बरबस ही उस बेचैन बुजुर्ग की ओर उठ जाती ।

आखिर एक नौजवान ने पूछ ही लिया — दादा, आप बहुत जल्दी में दिख रहे हैं । क्या कोई बहुत जरूरी काम है ? उस ना-जवान का सवाल सुनकर वृद्ध ने एक ठंडी सांस ली और कहा, “हाँ, मुझे नौ बजे तक अस्पताल पहुंचना है । वहां मेरी पत्नी भर्ती है, मुझे उसके साथ नाश्ता करना है मैं रोज उसी के साथ नाश्ता करता हूँ।”

स्वाभाविक रूप से नौजवान का अगला प्रश्न यही था कि उन्हें क्या हो गया है ? बुजुर्ग ने बताया, “उन्हें अल्जाइमर्स है । यह एक ऐसी बीमारी होती है, जिसमें धीरे-धीरे व्यक्ति की याददाश्त चली जाती है ।”

बीमारी के बारे में सुनकर युवक ने अफसोस जताते हुए कहा, “ओह! तब तो आपको जल्द से जल्द अस्पताल पहुंचना चाहिए, वरना उन्हें फिक्र होगी।”

बुजुर्ग बोले, “नहीं, उसे कोई चिन्ता नहीं होगी, उसकी याददाश्त जा चुकी है और यहां तक कि पिछले पाँच साल से वह मुझे भी नहीं पहचान रही है ।”

यह सुनकर युवक हैरानी से बोला, “और फिर भी आप हर सुबह उनसे मिलने जाते हैं ।” उनके साथ नाश्ता करते हैं “?। वृद्ध ने एक मीठी मुस्कान के साथ गम्भीर स्वर में जवाब दिया, “बेटे, भले ही वह मुझे नहीं पहचान पाती, पर मैं तो उसे अब भी पहचानता हूँ ।”

“प्यार चेहरे की पहचान का मोहताज नहीं होता है और न ही उसे बदले में प्यार चाहिए होता है । सच्चा प्यार, कुछ मिलने की उम्मीद के बगैर सिर्फ देना जानता है ।”

— साभार दैनिक भास्कर